E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

सवितृ (सविता) देवता का परिचय

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

ऋग्वेद के द्युस्थानीय देवों में सविता का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। ऋग्वेद के ग्यारह सूक्तों में इनकी स्तुति की गयी है। कुछ अन्य सूक्तों में कतिपय अन्य देवताओं के साथ भी सविता का स्तवन प्राप्त होता है। इनके नाम का उल्लेख प्रायः 170 बार हुआ है। सविता मुख्य रूप से स्वर्णिम देवता है। सविता सबके प्रकाशक देवता हैं। सविता एक शक्तिशाली देवता हैं। सभी देवता उनके नेतृत्व को स्वीकार करते हैं। वे स्थावर-जगत् के शासक हैं। ऋग्वेद में सविता के साथ कई देवताओं का तादात्म्य भी वर्णित है। अनेक स्थलों पर वे प्रजापति, पूषन्, मित्र और भग के रूप में वर्णित हैं। सविता प्राणियों के पापनाशक है। दुःस्वपनों के निवारण तथा अज्ञान और प्रमाद के कारण मनुष्य द्वारा किए गए अपराधों को दूर करने के लिए सविता की प्रार्थना की गई है। सविता नियमों के सुदृढ़ पालक हैं। कोई भी प्राणी यहाँ तक कि इन्द्र, वरुण, मित्र, अर्यमा और रुद्र भी इनके व्रत में बाधा नहीं पहुँचा सकते। सवितृदेव उदित होते हुए सूर्य के प्रेरक शक्ति के प्रतिरूप हैं। सविता शब्द 'सू' धातु से 'तृच्' प्रत्यय लगने पर निष्पन्न होता है। 'सू' धातु 'प्रेरित करने' के अर्थ में होती है। अतः इस शब्द का अर्थ हुआ 'प्रेरक' । सविता के सम्बन्ध में कतिपय प्रमुख तथ्य इस प्रकार है-

स्वरूप– सविता स्वर्णमय देव हैं। इनके हाथ, जिह्वा, नेत्र सभी स्वर्णिम हैं। इनके केश पीले रंग के हैं। ये स्वर्ण की कील वाले रथ पर चलते हैं। इनका रथ भी स्वर्णजटित हैं। इनके रथ को शुभ्रवर्ण वाले दो चमकीले अश्व खींचते हैं। इनके शरीर से निकलने वाली किरणें भी विचित्र रङ्गों से युक्त हैं। यह स्वर्णपाद, स्वर्णनेत्र, स्वर्णजिह्व, स्वर्णिम भुजाओं वाले, पीले केशों वाले तथा समन्तात् पिशङ्ग वेशधारी हैं। इनके पास स्वर्णमय रथ है, जिसे दो प्रकाशमय अश्व अथवा दो श्वेतपाद अश्व खींचते हैं।

कार्य- अन्धकारमय लोक से आते हुए सविता देव देवों एवं मनुष्यों को अपने कार्यों में युक्त कराते हैं। रोगों को नष्ट करते हैं। सूर्य का पथ-प्रदर्शन करते हैं। सबको विविध रूपों में देखने वाले सविता देव

द्युलोक एवं पृथिवी लोक के मध्यवर्ती स्थान में विचरण करते हैं। राक्षसों एवं मायावियों को नष्ट करते हुए सविता देव स्थित होते हैं। सविता देव जीवधारियों को मार्गप्रदर्शन करने वाले एवं अच्छी प्रकार से सुख प्रदान करने वाले देव हैं। इनका सर्वप्रधान कार्य रात्रिजनित अन्धकार को नष्ट करना एवं सभी जीवों को अपने-अपने कार्यों में प्रवृत्त होने के लिए प्रेरित करना हैं। ये अपने भक्तों की रक्षा करके उनके लिए मनोवाञ्छित फल प्रदान करते हुए उन्हें पापरहित बना देते हैं। पृथिवी की आठों दिशाओं, अन्तरिक्षादि तीन लोकों एवं सात नदियों को सविता देव विशेष रूप से प्रकाशित करते हैं। सविता को प्राण (शक्ति) देने वाला देव भी कहा गया है।

निवास स्थान- सविता देव का निवास स्थान द्युलोक है। ऋग्वेद के एक मन्त्र में एक विशेष तथ्य उद्घाटित किया गया है, जिसके अनुसार तीन लोक हैं, जिसमें से दो लोक सविता देव के समीप में स्थित हैं। प्रसिद्ध वेद भाष्यकार आचार्य सायण ने इसका अर्थ द्युलोक एवं भूलोक किया है जिसके कारण इन दोनों लोकों का सूर्य द्वारा प्रकाशित होना बतलाया है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि सवितृदेव का निवास स्थान भले ही द्युलोक है, परन्तु उन्होंने अपना कार्यस्थल भूलोक को ही बनाया है। मानव हितकारिणी चन्द्रनक्षत्रादि ज्योतियाँ एवं जल सवितृलोक में ही सविता के आधार पर स्थित हैं।

प्राकृतिक आधार– सविता देव को सूर्य के साथ समीकृत किया गया है। वास्तव में उष:काल एवं सूर्योदय काल के मध्य सविता का आगमन होता है। प्रकाशित करने का कार्य सूर्य की सर्वप्रमुख विशेषता है, अतः सवितृ को भी सूर्य मान लिया गया है। ऋग्वेद के अधिकांश मन्त्रों में सूर्य और सविता एक ही देवता के रूप में पुकारे गये हैं। यद्यपि अनेक मन्त्रों में सविता को सूर्य से पृथक् माना गया है। जैसे-अपामीवां बाधते वेति सूर्यमभि कृष्णेन रजसा द्यामृणोति।। उपर्युक्त तथ्य पर विचार करने पर ऐसा प्रतीत होता है कि सविता सूर्य का ही एक विशिष्ट अभिधान है, क्योंकि सूर्य ही विश्व के महान् प्रेरक हैं। वे ही सम्पूर्ण प्राणियों को अपने महान् आगमन के द्वारा प्रेरणा प्रदान करते हैं। सविता सूर्य की प्रेरकशक्ति के रूप में भी स्तुत हुए हैं। अतः स्पष्ट होता है कि सूर्य ही अपने पूर्णरूपेण उदय के पूर्व इस संज्ञा को प्राप्त करते हुए लोकप्रेरक बन जाते हैं। निरुक्तकार यास्क का स्पष्ट कथन है-सविता सर्वस्य प्रसविता।

देवों में स्थान- वैदिक देवताओं में सविता देव उपासना की दृष्टि से अपना अद्वितीय महत्त्व रखते हैं। ऋग्वेद के अन्य किसी भी देवता की उपासना इतनी श्रद्धा और भक्ति से नहीं हो सकी है। वैदिक ऋषियों ने बुद्धि की प्रेरक शक्ति के रूप में एक अति शक्तिशाली मन्त्र का दर्शन किया है जिसे गायत्री मन्त्र के नाम से जाना जाता है। यह गायत्री मन्त्र पूज्य सविता देव की स्तुति रूप में है। इसमें सविता देव की शक्ति का आह्वान बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करने के उद्देश्य से किया गया है- ॐ भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यम्। भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

आज इस वैज्ञानिक युग में भी सविता देव के इस मन्त्र की उपासना करके अनेकानेक भक्त अपना एवं जगत् का कल्याण कर रहे हैं। आधुनिक विज्ञान भी इस मन्त्र की रहस्यात्मिका शक्ति के अनुसन्धान में संलग्न होकर इसके ऊपर श्रद्धायुक्त बना हुआ है।